# आदिगुरु महात्मा रामचंद्र जी महाराज (लालाजी महाराज ) की कृपा प्रसादी )

१. हे परमात्मन मुझको सिर्फ आपकी जात और हुक्म जिसमें आपकी रजामंदी है, मंज़ूर है. मेरा लक्ष्य वह ही है जिसमें आपकी मर्ज़ी है मैने इस लोक के ख्याल को और परलोक के ख्याल को आपके वास्ते छोड़ दिया है. आप अपनी दया और कृपा दृष्टि मुझ पर कीजिये.

२. आदमी की ज़िंदगी का उद्देश्य यह है कि ईश्वर में लय हो जाय और वहां पहुंचकर उस जगह स्थिति कर ले, यही उसका कमाल और यही आइडियल तथा आदर्श है .

३. ईश्वर प्राप्ति का निश्चित मार्ग : मेरे नज़दीक यह अच्छा है कि (१) जिक्र ख़फ़ी यानी दिल का जाप किया करें. और (२) नाजिन्स और गैर आदमी और गैर सुहबत के नक्शों से दिल को साफ़ रखें, और

(३) परमात्मा के सिवाय किसी की तरफ तबज्जह न करें, और (4) इकसुई और एकाग्रता के साथ दिल हाज़िर रखने का पक्का इरादा कर लें, और (५) सत और मालिक की तरफ उन्सियत (प्रेम मोहब्बत ) व लगाव हासिल करना, और (६) अपने आप को मेट कर उसी में महव और लय हो जाना, और (७) इसी काम में अपने आप को मिटा देना. यह सबसे ज़्यादा नज़दीक रास्ता और असल पद तक पहुँचने का यकीनी जरिया है.

४. मैं केवल नाम आधार हूँ, और ईश्वर की तरफ निगाह किये हूँ, इसके सिवाय और कुछ नहीं जानता. जो विद्या ईश्वर प्राप्ति न करा सके उनके साधन में कमी और अंधकारमय समझना चाहिए.

५. नाजिन्स वह है जो तबज्जह (ध्यान ,रुख, कृपा दृष्टि ) को कबूल न करे.

.६. अगर इन्सान मुकम्मिल इन्सान (वातिन आलिम आमिल ) नहीं बन सकता तो वह ईश्वर को नहीं देख सकता और न अपनी समझ उसको आ सकती है.

७. हमको तो यह लाज़िम है कि हम उसके ख़ाकसार बन्दे बने रहें और अपना सर इंज्जोन्याज़ (दीनता,प्रेम ) उसके दरबार में झुकाये रखें. इसी में सलामती है.

८. अभ्यास का मुख्य प्रयोजन मोक्ष है जबकि जीवन में सूक्ष्म शरीर को अपने से एक मात्र अलग कर लेवें . वह रह न जावे तब आना जाना बाकी नहीं रह जाता.

९. सच्चे ज्ञानी धर्मशास्त्र के अनुकूल ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं. शरीअत और तरीकत में एकत्व दिखाते हैं .

१०. मैं तो उस काम का कायल हूँ जो कभी निपटने पर न आवे और जिसका सिलसिला कभी खत्म न हो और वह सिर्फ प्रेम है और मुहब्बत और यह काम सबसे ज़्यादा देरपा नतीजाखेज असलुल -असल पहुँचाने वाला है.

---